पितृ दोष परिचय और निवारण

October 2023

अमोघ तन्त्रम् के द्वारा जनकल्याण हेतु भेंट।

विषय

—

पितृ होते कौन है ?

सबसे पहले तो हमे यह जानना आवश्यक है की पितृ होते क्या है , पितृ से हमारा क्या संबंध है , इनका क्या महत्व है ?

पितृ दोष के लक्षण क्या है ?

ऐसे क्या लक्षण है जिससे आप पता कर सकते है कि आप पितृ दोष की समस्या से ग्रसित है ?

पितृ शांति कैसे करे ?

अगर आप पितृ दोष से पीड़ित है तो इस समस्या से कैसे बाहर निकले ?

आइए जानते है पितृ कौन होते है -

इन्हें आम भाषा मे पितर , घर का प्रेत भी बोलते है। यह आपके परिवार की वो आत्माएं होती है जिनका अभी दूसरा जन्म नही हुआ है मुक्ति नही हुई है। ये आत्माएं पितृ बनके पितृ लोक नामक सूक्ष्म लोक में वास करते है। यह लोक हमारी धरती पर ही स्थित होता है। जिसके कारण पितरों से संपर्क बनाना या इनकी कृपा प्राप्त करना सहज होजाता है। वहीं दूसरी और यह रूष्ट होने पर शीघ्र विपरीत प्रभाव भी दिखाते है।

इनमें अलग अलग श्रेणी होती है पितृ की जिसे आऊत प्रेत , जुझार , सगस , वीर आदि कहकर संबोधित करते है। इनपर बादमे बात करेंगे ।

इनका पितृ लोक में फसने का मुख्य कारण होता है अपूर्ण इच्छाएं एवं अविवाहित मृत्यु को प्राप्त होना , निसन्तान मृत्यु को प्राप्त होना , दुर्घटना मे अकाल मृत्यु आदि। अन्य भी कारण कहे गए है इसके जैसे पराई स्त्री का हरण , माता पिता की हत्या करना , गौ हत्या आदि , इनके विषय मे गरुड़ पुराण में विस्तार से बताया गया है।

पितृ हमारा सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण रक्षा कवच होते है , पितृ रूष्ट होने पर अन्य देवता तक आपका पूजन नही पहुंचता है न ही कोई अन्य कार्य सिद्ध होता है। यह ठीक उसी प्रकार है अगर नींव कमजोर हो तो उपर की मंजिल नही डाली जा सकती और अगर नींव मजबूत है तो मंजिल के ऊपर मंजिल डाल सकते है।

हर व्यक्ति का यह कर्तव्य होता है कि वो अपने कुल के पितरों की मुक्ति एवं सद्गति के लिए प्रयास करें , जिसके विपरीत आज लोग अपने घर के पितृ को अपने स्वार्थ के लिए बैठा कर उनसे काम लेते है। जो कि पितृ और स्वयं दोनो के लिए हितकारी नही है।

पितृ दोष या पितृ के रूष्ट होने के लक्षण क्या है ?

● घर में बरकत न रहना

● किसी बात को लेकर हर छोटी छोटी बात पर झगड़ना

● घर के एक दूसरे सदस्य को बैर भाव से देखना

● संतान नहीं होना

● परिवार में किसी भी प्रकार का संतुलन नहीं होना

● हमेशा बीमारी बने रहना

● अजीब अजीब घटना होना

● घर के सदस्य आपस में किसी की भी नहीं बने

● संतान माता-पिता का आदर नहीं करती हैं

● माता-पिता भी संतान को हमेशा प्रताड़ित करते रहते हैं

● मरे हुए बच्चों के सपने आना

● मरी स्त्रियों दिखना

● हमेशा मन में शंका बनी रहना कि कुछ न कुछ होने वाला है

● आदमी अपने कार्य की सफलता के लिए आश्वस्त रहता है 95 पर्सेंट तक पहुंचता है और फिर नीचे गिर जाता है

● हर बनते काम बिगड़ जाना

● सपने में बार बार सर्पो का दिखना

● परिवार के बुजुर्गों का स्वप्न में दिखना

● सपनो में अपने माता पिता दादा दादी को रोते हुए देखना

● घर परिवार में क्लेश होना

पितृ दोष परिचय और निवारण

पितृ दोष निवारण हेतु रामबाण उपाय

प्रति वर्ष यह उपाय करने पर कभी पितृ पीड़ा नहीं होती।

दूसरा एक सरल एवं असरदार उपाय है वो है - पितृ के लिए श्रीमद्भागवत गीता का पाठ। इसका विधान **3** वर्ष पहले भी बताया था जिन्होंने यह किया है उन्हें निश्चित लाभ हुआ है। जो लोग नए जुड़े है उनके लिए पुनः वो यहां लिख रहा हूँ।

यह उपाय आप श्राद्ध में करें।

पूर्णिमा के दिन सुबह पितरों को हल्दी चावल से निमंत्रण दें कि आज से मैं आपके लिए श्रीमद्भागवत गीता का पाठ कर रहा हूँ आपको यह पाठ सुनने के लिए रौज आना होगा जो आपको समय उचित लगे उन्हें वो समय भी बता दें कि इतने बजे पाठ करूंगा। ऐसा कहकर हल्दी चावल दहली के बाहर डाल दें।

अब जो निश्चित समय है उससे थोड़ा पहले से यह तैयारी करलें।

अपने कक्ष को झाड़ू पोंछा करके साफ करें। संभव हो तो स्वयं श्वेत वस्त्र धरण करलें और श्वेत आसान ही प्रयोग मे लें। फिर गौमूत्र का छिड़काव करें। गाय के गोबर से भूमि लीपें। फिर उसपर सफेद वस्त्र बिछाएं, 2 गांठ का एक हरा बांस का टुकड़ा लाएं। इसके एक तरफ सफेद कपड़ा कलावे से बांध दें। सुपारी जनेऊ और हल्दी की गांठ लाएं।

सफेद वस्त्र के ऊपर 1 पीछे और 7 ढेरी आगे लगाएं चावल की एक के ऊपर बांस को खड़ा रखें जसमे वस्त्र बांधा हुआ हिस्सा ऊपर की तरफ होगा और बाकी 7 ढेर पर एक एक सुपारी रखें और सुपारी पर जनेऊ पहनाए, सुपारी की जगह चुना पत्थर मिल जाये तो अति उत्तम होगा। अब आपके दिये गए निश्चित समय पर दहली पर खड़े होकर हल्दी कुमकुम और अक्षत डालकर पितरों का स्वागत करें और उनके अंदर आने का बोलें और सफेद आसन के ऊपर उनका आसान बताये और कहे आप अपने आसन पर विराजमान होजाये। अब आप धूप दीप प्रज्वलित करें। बांस पर और चुना पत्थरों (सुपारी) पर हल्दी कुमकुम आदि चढ़ाएं।

अपने सामने श्रीमद्भागवत गीता रखें, ग्रंथ का कुमकुम अक्षत से पूजन करें।

पितृ हेतु भोजन एवं पानी रखें भगवान विष्णु के लिए 2 पीली मावे की मिठाई रखें।

पितृ दोष शांति के उपाय

सबसे सरल और सहज उपाय -

अगर आज ज्यादा कुछ नहीं करना चाहते तो केवल यह दो दिन ध्यान रखें – पूर्णिमा और अमावस्या। इन दोनों दिनों पर आप अपने पितृ के लिए नियमित धूप करें। धूप आप अगियारी पर करें और दूध चावल और चीनी से बनी खीर से धूप करें। पितृ को खीर का भोजन अत्यंत प्रिय होता है। जिस प्रकार से देवता अग्नि मे दी हुई आहुति के माध्यम से हविष्य ग्रहण करते है, पितृ धुआ के रूप मे भोजन ग्रहण करते है। अगियारी पर अपने पित्रों को भोजन करवाए। और उनके नाम से एक दीपक पनिहारी पर लगाए। पनिहार उस स्थान को बोलते है जहां आपके घर मे पीने का पानी रखते है। (मटकी, घड़ा आदि रखने का स्थान)। और भोजन बनाते समय एक रोटी पितृ के निमित निकाल कर पनिहारी पर दीपक के साथ रखें। इस रोटी को बादमे आधी गाय को और आधी कुत्ते को खिला दें। इस उपाय को आप नियमित रूप से करे अवश्य लाभ का अनुभव करेंगे।

शुभमस्तु।

अब पाठ शुरू करें , रोज इसी प्रकार पाठ करना है संभव हो तो रोज सभी अध्यायों का पाठ करें और अगर सामर्थ्य नही हो तो 16 दिन में 18 अध्यायों का पाठ पूरा करलें।

पाठ पूरा होने के बाद जो पितृ के लिए भोग रखा था वो गाय के उपलों की अगियारी करके उसपर भोजन करवाये फिर जल अर्पित करें।

फिर उन्हें कहे अब अपने स्थान को चले जाइये कल फिर इस समय पर आजायेगा। आगे भी इसी तरह से करना है

जब 16 दिन के पाठ पूरे होजाये तब भगवान विष्णु से अपने पितरों की सद्गति हेतु प्रार्थना करें। उनहे वैकुंठ में स्थान देने के लिए प्रार्थना करें।

अगर आप चाहे तो पाठ 15 दिन में पूरे करके सोलहवें दिन सर्व पितृ अमावस्या को ब्राह्मण जन से पितृ हेतु तर्पण भी करवा सकते है। 7 ब्राह्मणों को सात सफेद वस्त्र दान करें।

क्रिया पूरी होने के बाद सभी सामग्रियों को एकत्रित करके किसी बहती नादि में प्रवाहित करदें। क्रिया के बाद निश्चित लाभ होगा।

अंतिम दिन पितरों को वापिस आने का नही बोलें उन्हें बोलें की अबसे आप श्री हरि के लोक में वास करना।

प्रयोग क्रमांक – 2

पाठ और हवन कैसे करें ?

यहां एक स्तोत्र दे रहा हूँ। जिसकी पाठ विधि इस प्रकार है।

पहले इसका एक पाठ पूरा होगा १ श्लोक से लेकर २४ फिर २२ २३ २४ के क्रम में दो बार पाठ करें।

एक पूरे पाठ का क्रम यह होगा - १ २ ३ ..... २४ , २२ २३ २४ , २२ २३ २४

फिर इसका हवन भी इसी क्रम से होगा काले तिल और गाय के घी से।

१ , २२ , २३ , २४ वे श्लोक में आहुति के समय स्वधा बोलके आहुति देनी है और अन्य श्लोकों में स्वाहा बोलकर।

स्तोत्र अगले प्रष्ठ पर देखें –

नमो वः पितरो, यच्छिव तस्मै नमो, वः पितरो यतृस्योन तस्मै।

नमो वः पितरः, स्वधा वः पितरः । ॥१॥

नमोऽस्तु ते निर्ऋर्तु, तिग्म तेजोऽयस्यमयान विचृता बन्ध-पाशान्।

यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति। तस्मै यमाय नमोऽस्तु मृत्यवे । ॥२॥

नमोऽस्त्वसिताय, नमस्तिरश्चिराजये। स्वजाय वभ्रवे नमो, नमो देव जनेभ्यः। ॥३॥

नमः शीताय, तक्मने नमो, रूराय शोचिषे कृणोमि।

यो अन्येद्युरूभयद्युरभ्येति, तृतीय कायं नमोऽस्तु तक्मने। ॥४॥

नमस्ते अधिवाकाय, परा वाकाय ते नमः। सुमत्यै मृत्यो ते नमो, दुर्मत्यै त इदं नमः। ॥५॥

नमस्ते यातुधानेभ्यो, नमस्ते भेषजेभ्यः। नमस्ते मृत्यो मूलेभ्यो, ब्राह्मणेभ्य इदं मम। ॥६॥

नमो देव वद्येभ्यो, नमो राज-वद्येभ्यः। अथो ये विश्वानां, वद्यास्तेभ्यो मृत्यो नमोऽस्तु ते। ॥७॥

नमस्तेऽस्तु नारदा नुष्ठ विदुषे वशा। कसमासां भीम तमा याम दत्वा परा भवेत्। ॥८॥

नमस्तेऽस्तु विद्युते, नमस्ते स्तनयित्नवे। नमस्तेऽस्तु वश्मने, येना दूड़ाशे अस्यसि। ॥९॥

नमस्तेऽस्त्वायते, नमोऽस्तु पराय ते। नमस्ते प्राण तिष्ठत, आसीनायोत ते नमः। ॥१०॥

नमस्तेऽस्त्वायते, नमोऽस्तु पराय ते। नमस्ते रूद्र तिष्ठत, आसीनायोत ते नमः। ॥११॥

नमस्ते जायमानायै, जाताय उत ते नमः। वालेभ्यः शफेभ्यो, रूपायाघ्न्ये ते नमः। ॥१२॥

नमस्ते प्राण क्रन्दाय, नमस्ते स्तनयित्नवे। नमस्ते प्राण विद्युते, नमस्ते प्राण वर्षते। ॥१३॥

नमस्ते प्राण प्राणते, नमोऽस्त्वपान ते।

परा चीनाय ते नमः, प्रतीचीनाय ते नमः, सर्वस्मै न इदं नमः। ॥१४॥

नमस्ते राजन् ! वरूणा मन्यवे, विश्व ह्यग्र निचिकेषि दुग्धम्।

सहस्रमन्यान् प्रसुवामि, साकं शतं जीवाति शरदस्तवायं। ॥१५॥

नमस्ते रूद्रास्य ते, नमः प्रतिहितायै। नमो विसृज्य मानायै, नमो निपतितायै। ॥१६॥

नमस्ते लांगलेभ्यो, नमः ईषायुगेभ्यः। वीरूत् क्षेत्रिय नाशन्यप् क्षैत्रियमुच्छतु। ॥१७॥

नमो गन्धर्वस्य, नमस्ते नमो भामाय चक्षुषे च कृण्मः।

विश्वावसो ब्रह्मणा ते नमोऽभि जाया अप्सासः परेहि। ॥१८॥

नमो यमाय, नमोऽस्तु, मृत्यवे, नमः पितृभ्य उतये नयन्ति।

उत्पारणस्य यो वेद, तमग्नि पुरो दद्येस्याः अरिष्टतातये। ॥१९॥

नमो रूद्राय, नमोऽस्तु तक्मने, नमो राज्ञ वरूणायं त्विणीमते।

नमो दिवे, नमः पृथिव्ये, नमः औषधीभ्यः। ॥२०॥

नमो रूराय, च्यवनाय, रोदनाय, घृष्णवे। नमः शीताय, पूर्व काम कृत्वने॥ ॥२१॥

नमो वः पितर उर्जे, नमः वः पितरो रसाय। ॥२२॥

नमो वः पितरो भामाय, नमो वः पितरा मन्धवे। ॥२३॥

नमो वः पितरां पद घोरं, तस्मै नमो वः पितरो, यत क्ररं तस्मै। ॥२४॥

---- # ---- # ---- # ---- # ---- # ---- # ---- # ---- # ---- # ----

शुभमस्तु

आमोघ नाथ
+91 7649064116
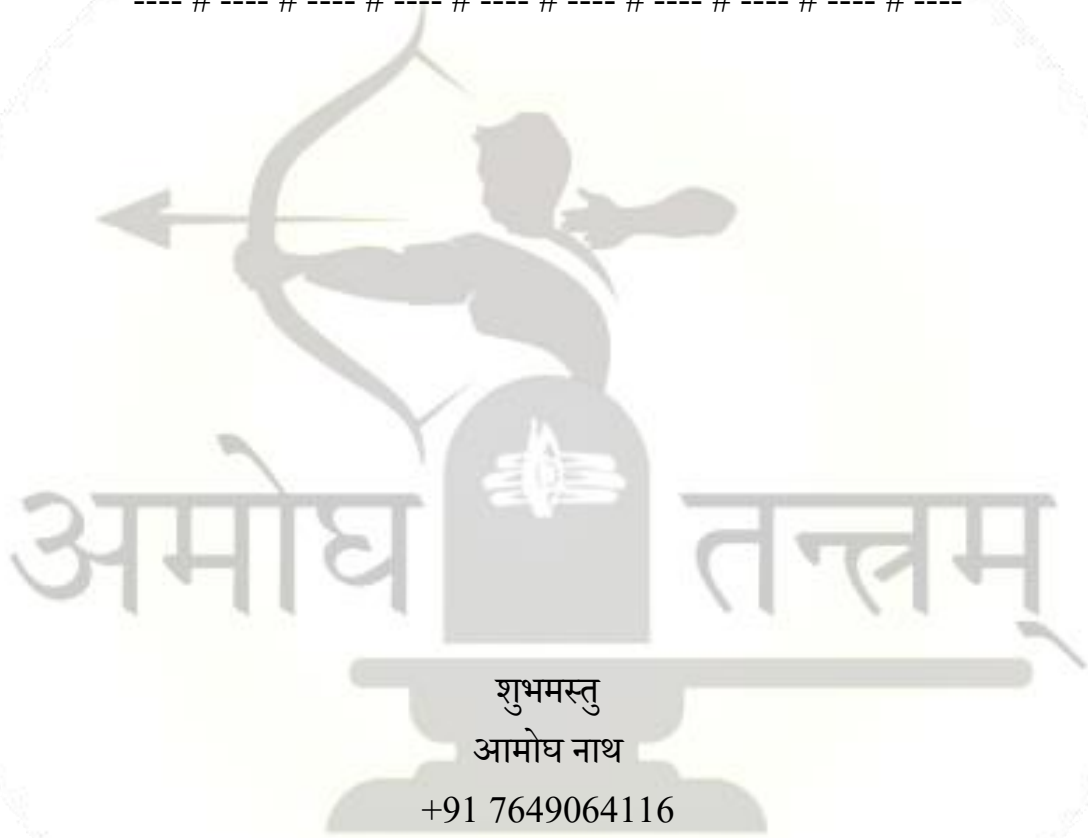
हमसे जुडने के लिए नीचे दिए लिंक्स पर क्लिक करे

फेस्बूक प्रोफाइल (अमोघ नाथ)

फेस्बूक पेज (अमोघ तंत्रम)

यूट्यूब चैनल

व्हाट्सप्प ग्रुप

व्हाट्सप्प चैनल